



# 朝晖暮霞

朱英武 著

新疆人民出版社



# 朝晖暮霞

朱英武 著 新疆人民出版社



责任编辑:井亚

封面设计:廉敏

## 朝晖暮霞

朱英武 著

---

新疆人民出版社出版

(乌鲁木齐市建中路 54 号 邮政编码 830001)

新疆新华书店发行 新疆新华印刷二厂印刷

787×1092 毫米 32 开本 11.25 印张

1994 年 8 月第 1 版 1994 年 8 月第 1 次印刷

印数:1——3000

---

ISBN7-228-03031-1/I·1079 定价:6.5 元

# 目 录

## 一、散文部分

|                 |     |
|-----------------|-----|
| 延安精神颂·····      | 3   |
| 腾飞的龙·····       | 20  |
| 山乡的心愿·····      | 33  |
| 访问井冈山·····      | 44  |
| 弘扬正气,永葆情操 ····· | 55  |
| 养子不教反为害·····    | 63  |
| 精明贤顺·····       | 79  |
| 忆伟人·····        | 92  |
| 桃李飘香·····       | 97  |
| 奇特的婚配味也甜·····   | 105 |
| 由此及彼·····       | 112 |
| 幸福的光环·····      | 120 |

## 二、诗歌部分

### 哲 理 篇

|              |     |
|--------------|-----|
| 都能应付自如·····  | 132 |
| 情长·····      | 134 |
| 向前走·····     | 136 |
| 无情历史最公平····· | 136 |
| 莫徘徊·····     | 137 |
| 执政观·····     | 137 |
| 戏与喜·····     | 138 |
| 净化人间·····    | 139 |
| 互相间·····     | 139 |
| 切记·····      | 140 |
| 不可分·····     | 141 |
| 大丈夫·····     | 142 |
| 不要错过今天·····  | 143 |
| 壮志酬乾坤·····   | 144 |
| 潇洒帅·····     | 144 |
| 公平曲直·····    | 145 |
| 奉献者最潇洒·····  | 147 |
| 粗衣淡饭养精神····· | 148 |
| 味自如·····     | 148 |
| 避人祸·····     | 149 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 悟道明理·····    | 150 |
| 爱憎分明·····    | 151 |
| 极而反·····     | 152 |
| 处事要诀·····    | 153 |
| 节高风自清·····   | 155 |
| 道自然·····     | 156 |
| 平天下·····     | 157 |
| 英豪·····      | 157 |
| 慎言·····      | 158 |
| 建功要诀·····    | 159 |
| 律人先律己·····   | 160 |
| 谈欲·····      | 161 |
| 破生死关·····    | 162 |
| 论用才·····     | 163 |
| 利与害人之间·····  | 164 |
| 与人交际·····    | 165 |
| 损与益·····     | 166 |
| 昂首挺胸·····    | 167 |
| 勇与谋·····     | 168 |
| 向东流·····     | 169 |
| 循规律·····     | 170 |
| 成才之路·····    | 171 |
| 清又轻·····     | 172 |
| 把好方向掌定舵····· | 173 |
| 客主协调百窍通····· | 175 |
| 千古功·····     | 176 |

|             |     |
|-------------|-----|
| 香花在中华·····  | 177 |
| 自舵手·····    | 177 |
| 练金身·····    | 178 |
| 相映红·····    | 178 |
| 贤母要诀·····   | 179 |
| 珍惜粮食·····   | 180 |
| 莫偷闲·····    | 180 |
| 万众一心·····   | 181 |
| 应除车匪路霸····· | 181 |
| 论办事·····    | 182 |

## 抒怀篇

|               |     |
|---------------|-----|
| 舞金秋·····      | 184 |
| 来来往往·····     | 185 |
| 新春述怀·····     | 187 |
| 醒悟·····       | 188 |
| 染旗红·····      | 189 |
| 叹秋·····       | 190 |
| 天鹅泪·····      | 191 |
| 再评伊期兰大饭店····· | 192 |
| 向前走·····      | 193 |
| 报祖·····       | 194 |
| 狗年初一思古唐·····  | 195 |
| 为了他你我·····    | 196 |
| 应吃苦中苦·····    | 197 |
| 共千秋·····      | 197 |

|            |     |
|------------|-----|
| 问急流·····   | 198 |
| 情丝紧紧缠····· | 199 |
| 可悟·····    | 201 |
| 水能·····    | 202 |
| 春风吹山林····· | 204 |
| 娇子必有病····· | 205 |
| 忙与闲·····   | 207 |
| 问安康·····   | 209 |
| 最伤心·····   | 209 |
| 真清凉·····   | 210 |
| 发传情·····   | 210 |
| 影天阙·····   | 211 |
| 舞天庭·····   | 211 |
| 是叶也是花····· | 212 |
| 颐和园·····   | 212 |
| 读书声·····   | 213 |
| 卫天山·····   | 213 |
| 思新疆·····   | 214 |
| 望滕楼·····   | 214 |
| 滕王阁·····   | 215 |
| 西江景·····   | 215 |
| 飞龙瀑·····   | 216 |
| 再咏飞龙瀑····· | 216 |
| 遥望五指峰····· | 217 |
| 雨杉·····    | 217 |
| 登庐山·····   | 218 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 话庐山·····     | 218 |
| 仙人洞·····     | 220 |
| 风雨含鄱口·····   | 220 |
| 五老峰·····     | 221 |
| 忆庐山·····     | 221 |
| 咏庐·····      | 222 |
| 浔阳酒楼·····    | 223 |
| 咏江州·····     | 225 |
| 烟水亭·····     | 226 |
| 镇江塔·····     | 227 |
| 咏白鹿·····     | 227 |
| 白鹿书院咏朱熹····· | 228 |
| 望江楼读琵琶行····· | 229 |
| 石钟山·····     | 232 |
| 咏石钟·····     | 233 |
| 又咏石钟山·····   | 233 |
| 看大同·····     | 234 |
| 问何因·····     | 234 |
| 锁天阙·····     | 235 |
| 若虎啸·····     | 235 |
| 自怜·····      | 236 |
| 松杉·····      | 236 |

## 杂 篇

|             |     |
|-------------|-----|
| 寺院法语抄录····· | 238 |
| 乌鲁木齐冬景····· | 238 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 雪莲花·····     | 239 |
| 更年妇·····     | 239 |
| 山乡景·····     | 240 |
| 爱情之歌·····    | 241 |
| 敬老歌·····     | 243 |
| 鸟鸣·····      | 246 |
| 为权势奴画像·····  | 247 |
| 唱起来·····     | 248 |
| 戏说丽丽泪·····   | 250 |
| 情歌填辞·····    | 252 |
| 甘南花儿会·····   | 254 |
| 姑娘心里只有他····· | 255 |
| 致妈妈·····     | 256 |
| 自慰·····      | 260 |
| 松叹·····      | 261 |
| 克败家像·····    | 262 |
| 山沟沟之歌·····   | 265 |
| 写长书·····     | 266 |
| 谢故人·····     | 266 |
| 空影月·····     | 267 |
| 山不空·····     | 267 |
| 问老道·····     | 268 |
| 拂清袖·····     | 268 |
| 海上情丝·····    | 269 |
| 满山红·····     | 270 |
| 笑西风·····     | 270 |

|               |     |
|---------------|-----|
| 思乡.....       | 271 |
| 交通警.....      | 271 |
| 万里歌.....      | 272 |
| 苦无诗.....      | 272 |
| 见老乡.....      | 273 |
| 谢厨娘.....      | 274 |
| 清洁工.....      | 274 |
| 他仍精.....      | 275 |
| 已夕阳.....      | 276 |
| 新疆四大画王.....   | 276 |
| 天山冬景.....     | 277 |
| 无底愁.....      | 277 |
| 断是非.....      | 278 |
| 好花.....       | 279 |
| 广告多自夸.....    | 279 |
| 该与不该.....     | 280 |
| 广告战.....      | 281 |
| 访江西棉纺印染厂..... | 281 |
| 江铃汽车厂发展经..... | 282 |
| 酒歌.....       | 283 |
| 观苍茫.....      | 283 |
| 富华山胡耀邦墓.....  | 284 |
| 无私商.....      | 284 |
| 赠梅.....       | 286 |
| 犁蒿草.....      | 286 |
| 老表谈景德镇瓷.....  | 287 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 景德镇瓷窑·····   | 288 |
| 长寿歌·····     | 289 |
| 越千秋·····     | 290 |
| 翠皮肠·····     | 290 |
| 到白头·····     | 291 |
| 勿蹉跎·····     | 291 |
| 不堪举目·····    | 292 |
| 刹不正之风·····   | 292 |
| 槐花香·····     | 293 |
| 观世情·····     | 293 |
| 秦皇岛上一枝梅····· | 294 |
| 修身之道·····    | 295 |
| 命运自握·····    | 300 |
| 奋而不争·····    | 302 |
| 坚定不移·····    | 303 |
| 成功之素·····    | 304 |
| 当机立断·····    | 306 |
| 心纯气正·····    | 307 |
| 克己制胜·····    | 308 |
| 把握人生·····    | 310 |
| 忙闲得休·····    | 311 |
| 有为斗无谓·····   | 313 |
| 奋进与满足·····   | 314 |
| 善学奋干·····    | 316 |
| 事业与欢乐·····   | 318 |
| 成功与失败·····   | 322 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 珍惜时光·····    | 324 |
| 决策之道·····    | 326 |
| 多听善择·····    | 328 |
| 轻装好走路·····   | 330 |
| 生活价值在自立····· | 332 |
| 叹世·····      | 334 |
| 世情·····      | 335 |
| 喜梅·····      | 336 |
| 余生心歌·····    | 338 |
| 梦情·····      | 340 |
| 抱犊寨·····     | 341 |
| 各有所好·····    | 342 |
| 劳动治百病·····   | 342 |
| 不劳则变·····    | 343 |
| 论流芳·····     | 344 |
| 心实志壮·····    | 345 |
| 创业·····      | 346 |

散文部分

散文部分



## 延安精神颂

登上宝塔顶，  
一览群山低。  
延河水长流，  
灯火今胜昔。  
当年创业难，  
中外千古稀。  
繁荣我中华，  
仍需此动力。

这是我参观革命圣地——延安时，在宝塔山顶，激情满怀地写下的几句衷心话。我是在全国解放前夕，1949年7月参加革命的青年。那时才只有15岁，懂得革命的道理不多，只知道共产党好，解放军好，人民政府好。我的家乡甘肃会川一解放就参加了部队，随军进入新疆。一晃40多年过去了，逐步懂得了革命道理，学习了党的路线方针政策，经过勤奋努力地工作，不断地锻炼提高自己，使自己成为一名国家干部。在我的意识中，祖国是无比伟大的，共产党是唯一正确的，延安是绝对神圣的。多年来，我多么想往延安，梦寐以求地想到革命的摇篮——延安看看，领略一下毛主席等老一辈无产阶级革命家在当时那种极为困难的环境中，如何沉着自如地指挥千军

万马战斗，最后取得胜利的，哪怕是看一眼延安也会心满意足的。这个愿望终于实现了。今年5月我有幸随首长出差，经过山西，沿着我所参加的部队二军，即当年的三五九旅走过的路线，跨过黄河到达了延安，实现了40多年一直期盼的夙愿。

第一天，我们登上了宝塔山，直登到塔顶，尽情阅览了延安全景。当今的延安已经是革命化加现代化了，无数的高楼拔地而起，工厂、商店林立，呜呜的火车串行而过，汽车在宽敞的公路上奔驰如梭，行人熙熙攘攘，热闹非凡，衣着质好而新颖，特别是到了傍晚，万家灯火把整个延安照得通明如昼。而夜间却清爽安静，甚至连鸟叫莺啼也清晰入耳。第一天就给我留下了格外亲切的印象：“古城现新貌，庄严又俊俏，神圣加发展，情眼胜三霄”。

夜幕降临后，主人用当地的小吃招待了我们，什么“莽丐饴饴、油炸糕，大碗饽饽麦火烧；羊杂烩加黄米酒，‘八碗席’是最佳肴。”这些食品不仅物美价廉，食味可口，而且花样繁多，真是大有别开生面之感。它不仅使我了解到世间，特别是老革命山区不仅保留着祖宗的优良传统，而且还有不断改进、很大的发展，连食品也是这样。可谓山外有山，天外有天啊！

第二天，我们在讲解员沙宁的帮助下，重点参观了革命领袖们在延安的故居，如凤凰山、杨家岭、枣园、王家坪等，看到他们当年的居住条件那么差，房屋简陋，室内陈设简单，都只有一张粗糙的木质桌椅，一床粗布做成的被褥，桌上一只喝水的粗碗，一支毛笔，一个砚台和一盏油灯。有的床上还放着一个纺线车。墙上挂的当年的照片中，他们穿的衣服上都有大小补丁。但个个都是精神饱满，斗志昂扬，同老百姓那么亲密无间，融成一体。他们就是在这种环境中，这种条件下，艰苦奋斗